CHATER 1, ईदगाह
PAGE 20, अभ्यास

11:1:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. 'ईदगाह' कहानी के उन प्रयोगो का उल्लेख कीजिये जिनमे ईद के अवसर पर ग्रामीण परिवेश का उल्लास प्रकट होता है।

उत्तर- इस प्रसंग में ईद के अवसर पर ग्रामीण परिवेश का उल्लेख है जो उल्लास भरा है :-
रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आयी है गावँ के सभी लोग बहुत ही उत्साहित है । आज का प्रभात बहुत ही मनोहर और सुहावना है । वृक्षों पर कुछ अलग हरियाली है । खेतों में अलग रौनक है आसमान में लालिमा है। सूर्य बहुत ही प्यारा है जैसे वह संसार को ईद की बधाई दे रहा हो । गाँव में हलचल का माहौल है और सब ईद्गाद जाने की तैयारियां कर रहे है । जिनके कुरते में बटन नहीं है

वे लोग पड़ोस के घर से सुई धागा लेने दौड़ा जा रह है।
कुछ लोग तेली के घर भागे जा रहे है क्योकि उनके जूते कड़े हो गए है । बैलों को जल्दी-जल्दी खाना -पानी दिया जा रहा है क्योकि ईदगाह से लौटते -लौटते दोपहर हो जायेगी ।
रोज़ ईद का इंतज़ार करते थे अब ईदगाह जाने में देरी कर रहे है । बच्चों को गृहस्थी की समस्यायों से कोई मतलब नहीं है । सेवइयों के लिए चीनी और दूध है या नहीं उन्हें मतलब नहीं उन्हें बस सेवइयों खाने को चाहिए । उन्हें नहीं पता उनके अब्बाजान भागे भागे चौधरी कायम अली के घर दौड़े जा रहे हैं । उन्हें क्या खबर की चौधरी आँख बदल लें तो यह ईद मुहर्रम हो जायेगी । बच्चे बार बार अपनी जेब से पैसे निकल कर गिनते है और और फिर रख लेते है। ऐसे खुश होते है जैसे उनकी जेबों में कुबेर का खज़ाना छुपा हो ।

11:1:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. 'उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दलबल लेकर आए, हामिद की आनंद भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।'- इस कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि आशा का प्रकाश मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों में भी निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

उत्तर- जिसके जीवन में आशा का प्रकाश सदैव बना रहता है वह जीवन में आगे बढाता है । आशा रूपी प्रकाश हमें शक्ति देता है जो निराशा के क्षणों से बाहर ले जाता है । जब विषम परिस्थितियां सामने आ जाती है कि मनुष्य की सोचने समझने की शक्ति क्षीण पड़ने लगती है । ऐसे में आशा की किरण विषम परिस्थितियों से बहार निकलने में सहयोग करती है। निराशावादी व्यक्ति आगे नहीं बढ सकता है वह जल्दी हार मान लेता है और वह

कष्टों से लड़ना छोड़ देता है । परन्तु जो मनुष्य आशा का दामन पकड़ कर रखता है वह कभी हार नहीं मानता और निरंतर आगे बढ़ता चला जाता है । उसे इस बात का ज्ञान होता है की उसकी मेहनत अवश्य रंग लाएगी । यही आशावादी सोच उसे निराशा से बाहर निकालती है और वह हमेशा प्रेरणा स्रोत पाता है । हामिद के माता -पिता उसके संग नहीं है परन्तु उसके पास यह आशा है कि उसके माता -पिता अवश्य लौटकर आयेंगे । जिसके कारण कि वह हमेशा प्रसन्न रहता है । वह जानता है कि उसके दिन अवश्य बदलेंगे । उसका विश्वास विपत्ति का सामना करने में सहयोग करता है ।

11:1:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. 'उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आँखें बदल लें, तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाए।'- इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस कथन में लेखक ये कहना चाहते हैं कि गाँव के सभी लोग किसी भी त्यौहार के लिए चौधरी से पैसे लेते है क्यूँकि वे लोग अत्यंत गरीब है। उनके पास त्योहारों पर होने वाले अतिरिक्त खर्च के लिए पर्याप्त धन नहीं है । यदि चौधरी गाँव के लोगो पर किसी बात को लेकर अगर नाराज़ हो जाता है ,तो वह उन्हें पैसे देने से इनकार कर सकता है । चौधरी की नाराजगी से गाँव के सभी लोगो के त्यौहार नष्ट हो सकते है । जिससे गाँव और घरों में शोक का वातावरण छा सकता है । इसलिए चौधरी के द्वरा अगर इंकार कर दिया जाता है तो गाँव वालो की सारी ईद मुहर्रम हो जाए ।

11:1:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. 'मानो भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए है।' इस

कथन के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि 'धर्म तोड़ता नहीं जोड़ता है।'

उत्तर- इस कथन के संदर्भ में लेखक का मानना ये है की जब ईद के समय नमाज़ अदा करते वक्त सभी लोग एक ही पंक्ति में बैठकर नमाज़ पढ़ते हैं । और हर एक पंक्ति के पीछे उसी प्रकार लोग अन्य और भी पंक्तियाँ बना कर बैठ जाते हैं और नमाज पढ़ते हुए सभी एक साथ झुकते और उठते हैं तो ऐसा लगता है मानो भातृत्व का एक सूत्र समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोये हुए है । एक की प्रकार से और एक ही समय पे नमाज़ पढने का तरीका सभी इंसानों जोड़ देता है ।सारे लोग एक साथ मिलकर प्रार्थना करते हैं । किसी के मन में किसी के प्रति द्‌वेष या शत्रुता का भाव नहीं होता है । उसकी हर रीति देख कर यही प्रतीत होता है की मानो में मनुष्यों को आपस में जोड़े कर रखने का प्रयास किया जाता है ।

5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) कई बार यही क्रिया होती है...............आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए है।

(ख) बुढ़िया का क्रोध...............स्वाद से भरा हुआ।

उत्तर

(क) **प्रसंग**- यह गद्यांश प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी 'ईदगाह' से लिया गया है। इस गद्यांश में सामूहिक रूप से नमाज़ अदा करने का दृश्य दिखाया गया है। लेखक ने नमाज़ अदा करने की प्रणाली का बड़े ही आकर्षक ढंग से वर्णन किया है।

व्याख्या- नमाज़ अदा करते समय एक साथ असंख्य लोग अपने सिर सजदे में एक साथ झुकाते हैं। वे एक साथ खड़े होते हैं और फिर एक साथ झुक जाते हैं। सभी के द्वारा यह क्रिया कई बार दोहराई जाती है। इस क्रिया को देखकर लगता है मानो बिजली के बल्ब एक साथ जलते व बुझते हैं। उनकी यह क्रिया चलती रहती है। यह दृश्य बहुत ही मनोहर है। लोगों की एक साथ इस प्रकार की क्रिया मन को श्रद्धा और आनंद से भर देती है। यह क्रिया सभी के अंदर भाईचारे की भावना का निर्माण करती है। ऐसा लगता है मानो सभी मानवों की आत्माओं को एकता के धागे में ऐसे पिरो दिया गया है, जैसे माला के धागे में मोती के दाने को।
विशेष- 1. लेखक ने ईदगाह में नमाज़ अदा करने के दृश्य का वर्णन बहुत सुंदर किया है।

2. रूपक तथा उपमा का प्रयोग अद्भुत है।

(ख) **प्रसंग**- यह गद्यांश प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी 'ईदगाह' से लिया गया है। इस गद्यांश में अमीना अपने पोते हामिद के हाथ में

चिमटा देखकर हैरत और शोक में पड़ जाती है। एक छोटा-सा बच्चा खाने-खिलौने के लालच को छोड़कर उसके लिए एक चिमटा खरीद लाया है।

व्याख्या- दादी ने जब हामिद से चिमटा लाने का कारण पूछा, तो उसका जवाब बहुत ही मासूम और समझदारी भरा था। अपनी दादी के हाथों को रोटी सेकते समय जलने से बचाने के लिए वह चिमटा ले आया। दादी, हामिद की बातें सुनकर भावुक हो गई। यह बात सुनकर उसका सारा गुस्सा जाता रहा और वह स्नेह तथा ममता से भर गई। वह प्रसन्नता के कारण कुछ बोल नहीं पा रही है। वह बस हामिद को देखे जा रही है। दादी स्नेह रस से भर गई थी, जो मजबूत, स्वादिष्ट और रस से पूर्ण था। वे हैरान थी कि इतने छोटे बच्चे की भावना कितनी सत्य और समझदारी से युक्त है।

विशेष-

1. लेखक ने दादी के मनोभावों का सुंदर चित्रण किया है।

2. गद्य की भाषा बहुत सरल है।

6. हामिद के चिमटे की उपयोगिता को सिद्ध करते हुए क्या-क्या तर्क दिए?

उत्तर- हामिद ने चिमटे की उपयोगिता साबित करने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए -

(क) खिलौने जल्दी नष्ट हो जाते हैं लेकिन चिमटे से कुछ नहीं बिगड़ेगा। ये चलता रहेगा।

(ख) दादी चिमटे को देखकर उसे लाखों का आशीर्वाद देंगी। उसे स्नेह के साथ गले लगाएंगे और लोगों के पास उसकी प्रशंसा करेंगे।

(ग) गर्मी, सर्दी, बारिश आदि में इसका कुछ नहीं बिगड़ेगा।

(घ) चिमटे का कई तरह से इस्तेमाल किया जा सकता है। इसका उपयोग खिलौने के रूप में, रोटियां सेंकने के लिए और हाथ से बने नाश्ते के रूप में किया जा सकता है।

PAGE 21, अभ्यास

11:1:1: प्रश्न-अभ्यास:7

7. गाँव से शहर जानेवाले रास्ते के मध्य पड़नेवाले स्थलों का ऐसा वर्णन लेखक ने किया है मानो आँखों के सामने चित्र उपस्थित हो रहा हो। अपने घर और विद्‍यालय के मध्य पड़नेवाले स्थानों का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर- अपने घर से मेरा विद्‍यालय 3 किलोमीटर है । मैं जहाँ रहता हूँ वो सेल का क्वार्टर है । मैं नीचे वाले घर में रहता हूँ । हमारे इलाके का बाज़ार इसके मध्य में है । मैं अपनी माँ के साथ रोज अपनी गाडी से स्कूल जाता हूँ । हम अपने घर से निकलकर सीधे मुख्य सड़क पर आ जाते हैं ।

सड़क से दाई तरफ छोटे छोटे फल वाले ,सब्जी वाले की दूकान है ।और इसी सड़क पर आगे जाकर शिवजी का मंदिर ,हनुमान जी का मंदिर है ।यहाँ पर कचोरी वाले की दूकान भी है ।रास्ते में जाते वक़्त बड़े बड़े मैदान और कई पार्क भी आते हैं । यहाँ पर कई बच्चे खेलने आते हैं ।इसी से बस थोड़े ही दूर पर मेरा विद्यालय है ।

11:1:1: प्रश्न-अभ्यास:8

8. 'बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमाना बन गई।' इस कथन में बूढ़े 'हामिद' और 'बालिका अमीना' से लेखक का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- हामिद बहुत छोटा था ।वह अन्य बच्चों के समान ही था ।उसकी उम्र पैसे की अहमियत और घरवालों की जरूरतों को समझने की नहीं थी ।

उसने फिर भी यह समझा और उन पैसों को व्यर्थ में नष्ट नहीं किया ।अपनी दादी के काम को सरल बनाने के लिए चिंमटा ख़रीदा ।प्रायः बच्चे खाने - पीने तथा खिलौने खरीदते समय रुपये की बर्बादी करते हैं ।हामिद ने ऐसा नहीं किया ।एक बड़े व्यक्ति के समान घर की जरुरत पर ही पैसा खर्च किया ।तब वह एक बुढा हामिद बन गया था । उसे अपनी जिम्मेदारियों का तथा घर की हालत के बारे में जानकारी थी ।इधर दूसरी ओर अपने पोते द्वारा किये गए कार्य से दादी प्रसन्न हो गयी । वह जहाँ दुखी थी वहीँ एक बच्चे की तरह हैरान थी । अतः वह बच्चों के समान रोने लगी । वह भूल गई कि वह उम्र में हामिद से बहुत बड़ी है ।

11:1:1: प्रश्न-अभ्यास:9

9. 'दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता!' - लेखक के

अनुसार हामिद अमीना की दुआओं और आँसुओं के रहस्य को क्यों नहीं समझ पाया? कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- अमीना ने आमिद को उसके माता -पिता के सम्बन्ध में झूठ बोला था । हामिद को यही पता था कि उसके पिता व्यापार के लिए बाहर गए हैं तथा उसकी माँ अल्लाह मिया के यहाँ गयी है । वहां से वह उसके लिए अच्छी चीज़ें लानी गयी है ।अतः जीवन के हर तंग हाल में वे यही कहकर संतुष्ट होता है कि जब उसके माँ पिताजी आयेंगे तो वो भी और बच्चों की तरह मज़े करेगा ।जब हामिद ने अपनी दादी को चिमटा दिया तो अमीना का दिल भर आया । वह उस बच्चे की उज्जवल भविष्य के लिए अल्लाह से दुआएं करने लगी और रोने लगी ।वह जानती थी कि हामिद के सर से माता -पिता का साया हट गया है ।यदि उसके माता -पिता होते तो उसका भविष्य ऐसा नहीं

होता ।अतः वह अल्लाह से दुआएं करने लगी और रोने लगी । यही कारण था कि हामिद इस रहस्य से अनजाना था ।

11:1:1: प्रश्न-अभ्यास:10

10. हमीद की जगह आप को क्या करते?

उत्तर- हामिद की जगह हम होते तो शायद इतना नहीं सोच पाते । इतनी छोटी उम्र में बच्चों को ललचाने के लिए अनेक वस्तुएं मिला करती हैं ।प्रत्येक मेले का यही उद्‌देश्य होता है कि आकर्षण से सबों को खींच लें ।हामिद की जगह हम होते तो शायद हम भी उसके दोस्तों की तरह कुछ खा पी लेते क्यूंकि दादी ने तो कहा था कि बेटे कुछ खा पी लेना ।इतनी बात तो दिमाग में नहीं ही आती कि दादी माँ के लिए चिंमटा खरीद लें ।